: षष्ठ अध्याय :

: षष्ट अध्याय :

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण

आधुनिक काल के महत्वपूर्ण कहानीकार कमलेश्वरजी ने उपन्यास साहित्य भी लिखा है। आधुनिक काल की समस्याओं का चित्रण तो उन्होंने किया ही है परंतु साथ-ही-साथ समाज के दो वर्ग पुरूष और स्त्री इनमें से स्त्री चरित्रों की उपेक्षा उन्होंने नहीं की है। उनके दो उपन्यासों को छोड़कर अन्य सभी उपन्यासों में नारी चरित्र उभरा है। इन नारी चरित्रों को अलग-अलग तरह के विभागों में विभाजित किया जा सकता है। परंतु इनमें अधिकांश नारियाँ नायिकाएँ ही है। इसी वजह से हम कमलेश्वर के उपन्यासों के नायिकाओं के चरित्र-चित्रण कर सकते हैं।

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण करने से पहले हमे यह देखना अत्यंत आवश्यक है कि चरित्र-चित्रण है क्या ? क्यों किया जाता है ? इसका उद्देश्य क्या है?

चरित्र-चित्रण :-

उपन्यासकार पात्रों का चरित्र-चित्रण कुछ विशेष उद्देश्यों से करता है। सबसे पहले तो जिन घटनाओं का चित्रण करना होता है, उसमें पात्रों का विशेष योगदान होता है। पात्रों के ही माध्यम से उपन्यासकार घटनाओं का ताना-बाना बुनता है। साथ-ही-साथ अपने उद्देश्य तक घटनाओं को पहुँचाने के लिए भी उपन्यासकार पात्रों का सहारा लेता है। उपन्यासकार ऐसे पात्रों के माध्यम से कभी-कभी कोई आदर्श भी उपस्थित करना चाहता है। पात्रों के द्वारा बोले जानेवाले संवादों से उपन्यास की गति बढ़ जाती है। इस प्रकार उपन्यास में पात्रों अथवा चरित्रों का अत्यंत महत्त्व है।

उपन्यास में प्रमुखतम रूप में जिस पुरूष चरित्र का विश्लेषण किया जाता है, उसे नायक कहा जाता है। और जिस स्त्री चरित्र का प्रमुख रूप से विश्लेषण किया जाता है, उसे नायिका कहा जाता है। कभी - कभी नायक के साथ सहनायक और नायिका के साथ सहनायिका भी होती है। अन्य सभी पात्र गौण रूप से

चित्रित किये जाते है। आधुनिक काल में जैसे ही विचारों में परिवर्तन आया और नारी का स्थान महत्वपूर्ण होने लगा, नायिका प्रधान उपन्यास लिखे जाने लगे और उसकी भावनाओं का, उसके मन का विश्लेषण उपन्यासों में होने लगा। इन नायिका प्रधान उपन्यासों में नायिकाओं का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उनके ही इर्द-गिर्द उपन्यास की कथा चलती रहती है। इन उपन्यासों में चाहे नायक हो भी तो वह नायिका की तुलना में कम महत्त्वपूर्ण होता है। इन उपन्यासों में नायिका की चरित्रगत विशेषताएँ अथवा नायिका का चरित्र-चित्रण अन्य पात्रों एवं पाठकों पर प्रभाव डालनेवाला होता है। इसकी ओर सभी आकृष्ठ भी हो जाते है।

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण

आधुनिक काल में 10 उपन्यास लिखकर उपन्यास क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान बनानेवाले कमलेश्वर हिंदी के एक ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने हिंदी फिल्म जगत् को भी अपने उपन्यासों के जरिए कुछ कथाएँ, पटकथाएँ दी। कमलेश्वरजी की विशेषता यह है कि उनके उपन्यासों में से सात उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास है। कुल मिलाकर उनके उपन्यासों में 11-12 स्त्री पात्र प्रमुखतम रूप में चित्रित है। कमलेश्वर की नायिकाएँ अपने ढ़ंग की निराली है। चाहे इन नायिकाओं की कुछ समस्याएँ कमलेश्वरजी ने समान रूप से चित्रित की हो फिर भी इन नायिकाओं के चरित्र-चित्रण में काफी अंतर हैं। अब हम एक-एक नायिका का अलग-अलग चरित्र-चित्रण करेंगे।

बंसिरी :

कमलेश्वरजी का प्रथम उपन्यास `एक सड़क सत्तावन गलियाँ` की नायिका बंसिरी है। यह उपन्यास बंसिरी और सरनामसिंह के द्वंद्वयुक्त प्रेम को प्रस्तुत करता है। इसमें वेश्या समस्यापर प्रकाश डाला है। उपन्यास की नायिका बंसिरी के चरित्र को उपन्यासकार ने प्रमुखता दी है।

आर्थिक दृष्टि से विवश - नारी चाहे आधुनिक काल की हो या प्राचीन काल की वह किसी-न-किसी पर निर्भर रहती है और इसी वजह से वह आर्थिक दृष्टि से विवश बन जाती है। उसका समाज में स्थान इसी कारण बहुत कम है। नारी को हमेशा अबला माना जाता रहा है। आधुनिक काल में वह चाहे नौकरी करने लगी हो पुरूषों के

कंधे- से-कंधा मिलाकर काम कर रही हो, फिर भी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तो उसे उठानी ही पडती है। बंसिरी आर्थिक दृष्टि से विवश है। वह सरनाम नामक लारी ड्राईवर जो एक डाकु भी है, उससे प्यार करती है। वह नाटक में मुख्य नायिका बनने की सोचती है। लेकिन इसी बीच वह बेची जाती है और जिससे वह प्यार करती है उसी सरनाम के द्वारा न पहचानी जाने के कारण अपने दोस्त रंगीले के लिए वह खरीदी जाती है।

वेश्या - जब बंसिरी नाटक मंडली के साथ काम करती है तभी वह नखरा दिखाना आँख मारना सीखती है और जब वह बेची जाती है तो उसे एक वेश्या के रूप में प्राप्त करती है। डाकुओं के पंजेसे छुड़ानेवाले अपने प्रेमी सरनाम को वह प्राप्त नहीं कर पाती है और उसी के दोस्त के पास उसे रखेल के रूप में रहना पड़ता है।

दोहरा व्यक्तित्व - जब बंसिरी सरनाम के दोस्त रंगीले के पास रहने चली आती है तो सरनाम को लेकर उसके मन में द्वंद्व उभरता है। वह उससे प्यार भी करती है और उसी के द्वारा खरीद लिए जाने के कारण उससे घृणा भी करती है। वह सरनाम के साथ ठीक से बातें नहीं कर पाती, उल्टे उसपर सीधे वार किया करती है। स्वयं सरनाम भी उसी प्रकार का व्यक्ति है जो कभी बंसिरी से प्यार करता है तो कभी घृणा। एक डकैती के मामले में बंसिरी रंगीला न उलझ जाए इसलिए न चाहते हुए भी एक झुठा तमाशा खड़ा कर देती है और उनके आश्रय में आये सरनाम को भाग जाने पर और अदालत में दाखिल होने पर मजबुर करती है।

दृढ़निश्चयी - बंसिरी एक बार जो बात तय कर लेती है, वह पूरा करके ही दिखा देती है। जब पुलिस के सामने डकैती के मामले में बयान देने का वक्त आता है तो सरनाम के प्रति उसके मन में चाहे जितने विचार उमड़- घूमड़ कर आते हैं. फिर भी वह कहती है कि वह सरनाम को नहीं पहचानती।

पश्चातापदग्ध - अंत में वह एक पश्चातापदग्ध नारी के रूप में हमारे सामने आती है। जब डकैती के मामले में रंगीले को सजा हो जाती है और सरनाम उसे उसके घर पहुँचाने के लिए आता है तो उसे अपने किये पर पश्चाताप होने लगता है वह सोच में पड़ जाती है - ``वह सरनाम को सात साल के लिए जेल जाते हुए देख पायेगी देख भी पायेगी या नहीं, मन कैसा होगा ? पछतावा तो नहीं होगा ? पछतावा कैसा ----।''[1]

बंसिरी यह सोचती है पर फाँसा उल्टा पड़ जाता है। जब सरनामसिंह उसे घर छोड़कर चला जाता है और किसी

चीज की जरूरत हो तो कहने की बात करता है तो वह रो पड़ती है और सरनामसिंह नहीं समझ पाता कि वह क्यों रो रही है।

इस प्रकार हम यह देखते है कि बंसिरी आर्थिक दृष्टि से विवश नारी, वेश्या, दोहरा व्यक्तित्व, दृढनिश्चयी नारी, पश्चातापदग्ध नारी आदि रूपों में इस उपन्यास में चित्रित हुई है। इस उपन्यास से उसका स्वाभिमान भी साफ झलकता है। कमलेश्वरजी ने एक सामान्य लड़की के चरित्र को कई रूपों में चित्रित किया है।

इरा :-

कमलेश्वर का द्वितीय उपन्यास `डाक बंगला` की नायिका इरा है। इस उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक उसके अकेलेपन का वर्णन है। एक तरह से आत्मकथनात्मक शैली में लिखे गये इस उपन्यास में नायिका इरा के जीवन में कई पुरूष आते हैं और फिर भी वह अकेली बन जाती है।

भावूक एवं संवेदनशील - बचपन में इरा एक अबोध, अलहड़ बालिका थी। कॉलेज जीवन तक आते- आते उसका व्यक्तित्व निखरता चला जाता है। और उसका सौंदर्य भी बढ़ने लगता है। कॉलेज जीवन में वह सपनों के राजकुमार को देखती है और उसी को लेकर नाटक लिख डालती है। उसकी यही भावूकता आगे चलकर उसके जीवन को बदल देती है।

साहसी प्रेमिका - कॉलेज जीवन में नाटक में काम करते समय इरा के जीवन में विमल आ जाता है जो नाट्य क्षेत्र के लिए समर्पित युवक है। वह विमल की तुलना अपने सपनों के राजकुमार से करती है और वह विमल को लेकर बड़े-बड़े सपने देखती हैं। उसके साथ प्यार करने लगती है। जब वह देखती है कि उसके घरवालों का इस शादी के प्रति रूख अच्छा नहीं है तो वह उसके साथ भाग जाती है।

शक के घेरे में नौकरी - इरा विमल के साथ भाग तो जाती है परंतु आर्थिक स्थिति को स्थिर रखने के लिए इरा को नौकरी करनी पडती है। विमल शक्की मिजाज का युवक है। इरा बतरा के घर फोन रिसीव करनेवाली रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम करती है। वहीं वह चक्कर काटने लगता है। उन दोनों में झगड़ा भी बढ जाता है। विमल सोचता है कि अपने बंगले में फोन रिसीव करने के लिए बतरा को रिसेप्शनिस्ट की क्या जरूरत है ? इसी

शक के कारण विमल इरा को छोड़कर चला जाता है।

मजबुर - विमल जब इरा को छोडकर चला जाता है तो मजबुर होकर इरा बतरा के घर में ही रहने चली जाती है। एक दिन बतरा की पत्नी आ जाती है और हमेशा शांत रहनेवाला बतरा खिल उठता है। लेकिन जब वह चली जाती है तो बतरा उसे बताता है कि वह उसकी पत्नी नहीं है। वह आश्चर्य में पड़ जाती है और बतरा के आँसु देखकर भावूकता में बहकर उसे समर्पित हो जाती है। लेकिन जैसे ही उसकी जरूरत समाप्त हो जाती है वह उसे घर से निकाल देता है।

पुरूषों को आकर्षित करनेवाली - नौकरी से निकाल दिये जाने के कारण विवश बनी इरा पुरूषों को आकर्षित करने लगती है। वह उसके जीवन में आये हर पुरूष से कहती है कि वह उसके जीवन में आया पहला पुरुष हैं। वह बताती है -

``जब-जब, जो भी मेरी जिंदगी में आया, उसने जाने-अनजाने, घूमा फिराकर या फिर सीधे-सीधे हमेशा यही जानने की कोशिश की कि मैंने पहले किसी से प्यार तो नहीं किया। पुरुष का यही सबसे बड़ा संतोष है। और मैंने अपने हर प्रेमी से यही कहां है कि तुम मेरी जिंदगी में पहले हो, तुम प्रथम हो ! यह खुबसूरत फरेब मैं करती रही हूँ। इसके अलावा मैं और कुछ कह भी नहीं सकती थी। मैं हर पुरुष यही चाहती रही हूँ की वह मुझे अपना अंतिम प्यार दे, मेरे बाद उसकी जिंदगी में कोई न हो।``[2]

अर्थात यहाँ वह पुरुष के प्यार की प्यासी स्त्री के रूप में भी हमारे सामने आती है।

आर्थिक विवशता :- इरा के जीवन से बतरा चले जाने के बाद उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। और वह मजबूर हो कर अधेड़ उम्र के डॉ.चंद्रमोहन की बीबी बन जाती है। जिसे दो बच्चे भी है। वह डाक्टर से हमेशा घृणा करती है। लेकिन मजबूर होकर वह उसके साथ रहती है। जब डॉक्टर चंद्रमोहन की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आर्थिक चिंता कम होने लगती है क्योंकि वे उसके नाम कुछ पैसे छोड़कर मर जाते है।

अस्थिर जीवन जीनेवाली :- डॉ.चंद्रमोहन की मृत्यु के बाद इरा के पास जगह स्थिर नहीं रह पाती है। वह सोलंकी जैसे कई पुरुषों के सम्पर्क में आ जाती है परंतु उसे सच्चा प्यार नहीं मिल पाता और जब तिलक जैसा व्यक्ति उसे

मिल जाता है, जो सबकुछ सुनने के बावजूद भी उसे अपनाने के लिए तैयार है, तो वही उसे इन्कार कर देती है।

अकेलापन :- आरंभ से लेकर अंत तक इरा अकेली ही है। उसके जीवन में जब विमल आ जाता है तो सबकुछ त्यागकर वह उसके साथ भाग निकलती है। वह जब शक के कारण उसे छोड़ देता है तो अकेली इरा बतरा का हाथ पकड़ लेती है। बतरा भी जब उसे घर से निकाल देता है तो अकेलेपन से बचने के लिए डाक्टर चंद्रमोहन जैसे अधेड़ से शादी कर लेती है। लेकिन डॉक्टर चंद्रमोहन की मौत के बाद भी वह अकेली ही पड़ती है सोलंकी जैसे कई पुरुष उसके जीवन में आकर भी वह अकेली ही रहती है।

इस प्रकार एक अस्थिर जीवन जीनेवाली इरा को हरएक पुरुष डाकबंगले की तरह अपना लेता है और छोड़ देता है। एक भावुक प्यार की प्यासी आर्थिक दृष्टि से विवश, अकेली, अस्थिर जीवन जीनेवाली स्त्री के रूप में इरा का चरित्र-चित्रण किया गया है।

मालती :-

कमलेश्वर के तृतीय उपन्यास `काली आँधी` की नायिका मालती है। बचपन से ही वह होशियार है इसलिए उसके पिता उसे विदेश भेजना चाहते है परंतु वह होटल चलानेवाले जगदीश वर्मा उर्फ जग्गीबाबू से शादी कर लेती है उन्हीं के प्रोत्साहन पर वह इलेक्शन के लिए खड़ी हो जाती है और यहीं से उसके व्यक्तित्व के कई पहलु हमें दिखाई देते है।

सफल राजनीतिज्ञ :- जग्गी बाबू के प्रोत्साहन पर मालती इलेक्शन में खड़ी हो जाती है और जीत जाती है। फिर वह कहीं भी रूकती नहीं है। सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती चली जाती है। वह राजनीतिक दाँव-पेच अच्छी तरह समझ लेती है। विरोधी नेताओं की ईट का जवाब पत्थर से देती है। राजनीति की होड़ में उसके द्वारा रचे गये हाथकंडे सफल सिद्ध हो जाते है। परंतु इसका असर उसके परिवार पर पड़ता है।

दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव :- जब मालती प्रथम चुनाव जीत जाती है तो अपने पति का होटल बिजनेस उसे अच्छा नहीं लगता। उसे लगता है कि उसकी इमेज खराब हो रही है इसी वजह से वह उन्हें होटल बंद करने की सलाह देती है। उसके सुखी परिवार में यही से दरार पड़ती है क्योंकि जग्गी बाबू और उनकी बेटी लिली अकेले पड़ जाते

है। वे दोनों अलग रहने लगते हैं। जग्गी बाबू लिली को होस्टल में डालकर स्वयं गोल्डन सन् नामक होटल में मॅनेजर बन जाते हैं। कई सालों बाद जब मालती उसी गाँव से इलेक्शन लड़ने के लिए उसी होटल रहने आती है तो न तो बेटी माँ को पहचान पाती है और माँ बेटी को।

दृढ़ एवं स्थिर - मालती हमेशा ही दृढ़ एवं स्थिर रहती है। जब उसे पता चलता है कि जग्गी बाबू उसे छोड़ कर चले गये हैं और साथ में लीली को भी ले गये है तो वह स्थिर रहती ही है, विरोधी नेता जब उसके चरित्र पर उँगली उठाते हैं तो भी वह उतनी ही स्थिर रहती है। हमेशा वह गंभीर बनी रहती है। इसी वजह से विरोधियों के हथकंडे सफल नहीं होते।

निर्णय पर अड़िग - मालती एक बार लिया हुआ निर्णय चाहे वह राजनीति का हो, चाहे व्यक्तिगत जीवन का, वह उसपर अड़िग रहती है। राजनीति में आने के अपने निर्णय को परिवार बिखर जानेपर भी वह छोड़ती नहीं हैं। इसी वजह से सफलता उसके कदम चूमती है।

पति के प्रति सम्मान भावना - चाहे मालती और जग्गी बाबू अलग रहते हो फिर भी मालती अपने पति का सम्मान करती है। वह अब भी उनके सामने शराब पीने से कतराती है। अन्य लोगों के साथ बातचीत खुले वातावरण में करने से उनके सामने झिझकती है। जब जग्गीबाबू इलेक्शन में उसकी मदद करते हैं तो उनके प्रति उसके मन में दया उपजती है। वह अपने पति को, बेटी को उपहार भेजती है। उसके मन में अब भी उनके लिए प्यार है।

पारिवारिक जीवन में असफल - सफलता की चाहे जितनी सीढ़ियाँ मालती ने चढ़ी हो फिर भी पारिवारिक जीवन में वह असफल है। क्योंकि राजनीति की सफलता की अंधी प्यास ने उसके दिल की ममता को सुखा दिया है। परिवार के सदस्यों की वह उपेक्षा ही करती है। चाहे उसके दिल में उनके प्रति प्यार हो फिर भी उनका प्रयोग वह सिर्फ स्वार्थ के लिए करती है।

मालती के चरित्र के बारे में डा.अमर जायसवाल ने लिखा है - ``मालती उस पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण करती है उन्हें बहकाती है। और उनकी कमजोरी का हर जगह जितना संभव हो सके उतना फायदा उठाती है। स्वार्थी और खुदगर्ज

व्यक्ति चित्रण में लेखक ने मालती के रूप में एक स्वाभाविक और प्रभावी पात्र का निरूपण किया है।``[3]

इस प्रकार हम यह पाते है कि एक सफल राजनीतिज्ञ, होशियार, भावुक संवेदनशील, शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली, दृढ़, संयमी, गंभीर, परिवार विघटन का कारण बननेवाली फिर भी पति का सम्मान करनेवाली, झूठी प्रतिष्ठा चाहनेवाली सफलता की प्यासी नारी के रूप में कमलेश्वर जी ने मालती का चरित्र चित्रण किया है।

चित्रा :-

कमलेश्वर का `तीसरा आदमी` उपन्यास एक मध्यमवर्गीय दाम्पत्य का चित्रण करता है। पति और पत्नी के बीच तीसरे आदमी के आ जाने से जो संघर्ष निर्माण होता है उसी संघर्ष का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। वैसे तो इस उपन्यास की नायिका चित्रा है जो उपन्यास के नायक नरेश की पत्नी है। नरेश नौकरी के कारण जब अपनी पत्नी को दिल्ली में अपने भाई सुमन्त के पास ले आता है तो जगह की कमी के कारण उन्हें उसके पास ही रहना पड़ता है। चित्रा सुमन्त से खुलने लगती है जब की नरेश के सामने वह दब-सी जाती है।इसी वजहसे नरेश को चित्रा पर शक होने लगता है और शक के परिणाम स्वरूप परिवार विघटन हो जाता है।

पति से बेहद प्यार - चित्रा अपने पति से बेहद प्यार करती है वह पति से बार-बार आग्रह करती है कि वे दोनों अलग कमरा लेकर रहे। जब उसे अपने पति के शक्की मिजाज का पता चलता है तो वह अंदर-ही-अंदर घुटती चली जाती है। उसकी तो समझ में नहीं आता कि उसका पति उसपर किस कारण शक कर रहा है।

पति की उपेक्षा - जब चित्रा को अपने पति के शक्की मिजाज का पता चलता है तो पहले तो वह समझ ही नहीं पाती परंतु बाद में जब हर बात में उसका शक आड़े आने लगता है तो एक तरह से वह पति के प्रति लापरवाह हो जाती है। वह तो उसकी उपेक्षा ही करने लगती है। पहले सफाई पेश करने वाली चित्रा अब चुप रहने लगती है।

द्विधा मनस्थिति - चित्रा का मन हमेशा द्विधा में डोलता रहा है। एक ओर वह सुमन्त के प्रति आकर्षित है और दूसरी ओर वह पति से भी प्यार करती है। इसी उधेड़ बुन में वह निरंतर फँसी रहती है। उसकी स्थिति का विश्लेषण स्वयं नरेश ने इन पंक्तियों में किया है - ``हम तीनों ही जैसे अपने संशंय में डूब-उतरा रहे थे। चित्रा को कुछ कहना ही नहीं था।``[4]

वह जब सफाई पेश करती है तो उसका पति उसका और उल्टा अर्थ लगा लेता है और उसपर ज्यादा शक करने लगता है।

दूसरे पुरुष के प्रति आकर्षण और प्यार - पति के द्वारा शक करने के कारण चित्रा सुमन्त के प्रति और भी आकर्षित हो जाती है। यहाँ तक की नरेश को एक दिन वे दोनों नई दिल्ली स्टेशन के पास घुमते दिखाई देते है सुमन्त चित्रा के कंधेपर हाथ रखते हुए मुक्त भाव से चल रहा है और चित्रा उससे हँसकर बाते कर रही है, यह दृश्य वह देख नहीं पाता है और वह उसे गर्भावस्था की स्थिति में छोड़कर चला जाता है।

अंह भाव - चित्रा में इतना अहंभाव है कि जब नरेश उसे छोड़कर जाता है तो वह यह भी नहीं पुछती है की वह कब वापस आयेगा। स्वयं नरेश ही चित्रा के चरित्र को विश्लेषित करते हुए कहता है की ``बर्दाश्त करने की अदभूत क्षमता थी, चित्रा में। वह कुछ भी कहने या मानने में विश्वास नहीं करती थी। अजीब था उसका अहम् ।''[5]

दृढ़निश्चयी - चित्रा इतनी दृढ़निश्चयी है कि जब नरेश उसे छोड़कर चला जाता है तो स्वंय सुमन्त की मदद से अस्पताल में अपने बच्चे को पैदा कर अकेली रहने का निर्णय लेती है। जब अंत में नरेश उससे मिलने चला आता है और उससे आत्मियता प्रस्थापित कर लेता है तो वह सीधा दो टुक उत्तर देती है - यह नहीं होगा अब उसने निश्चय किया है और वह अकेली ही रह लेगी।

इसी प्रकार हम पाते है कि अकेलेपन को बदार्श्त करती चित्रा पति के शक के कारण घुटन महसूस करती है। इसी वजह से वह हमेशा द्वंद्व में रहती है। साथ ही वह दृढ़निश्चयी भी है। इस प्रकार अत्यंत आसान भाषा में चित्रा के चरित्र को कमलेश्वर ने नरेश के माध्यम से उद्घाटित किया है।

चाँदनी -

कमलेश्वर के `आगामी अतीत` उपन्यास की नायिका चाँदनी है जो एक शोषित स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है। उपन्यास के नायक कमल बोस के द्वारा फँसायी गयी चंदा की चाँदनी इकलौती संतान है। परिस्थिति से विवश होकर चाँदनी वेश्या बन चुकी है।

वेश्याजीवन - कमल बोस की पत्नी चंदा जब आत्महत्या कर लेती है तो कमल बोस चाँदनी की खोज में निकल

पड़ता है। चाँदनी पक्की वेश्या बन चुकी है। वह ग्राहकों को बाहर निकालने में सफल हो जाती है। वह कभी अत्यंत सीधे शब्दों में तो कभी कोसते हुए गाली देकर बात करती है। कमल बोस को उसे देखकर दुख होता है तो वह उसे महिने का कॉन्ट्रक्ट करके अपने बंगले पर ले आता है वह उसका उपभोग नहीं ले पाता। यह देखकर उसे ग्राहक के रूप में देखने वाली चाँदनी कहती है कि - ``तुम अमीरों के ये इश्क-विश्क के चोंचले अपने लिए बेकार है। हम इश्क नहीं करते, पेट भरते हैं पेट ! पाँच मिनट में एक आदमी फारिग होता है------- समझे ! यही सब करना है तो हमारे यहाँ तुम्हारी हवस भी पुरी हो जायेगी और पैसा भी बचेगा।``[6]

इस वाक्य से चाँदनी के जीवन की यथार्थ स्थिति का पता हमे चलता है।

शोषिता स्त्री : - जब चाँदनी की माँ मर जाती है तो जिस पागलखाने में उसकी माँ मरी है, वहीं चाँदनी पर बलात्कार किया जाता है। इसी वजह से अत्यंत मजबूर होकर वह वेश्या बनने पर मजबूर हो गयी है। वह आर्थिक दृष्टि से भी विवश रही है। माँ के मरने के बाद पेट पालने के लिए विवश होकर उसे यह काम करना पड़ रहा है।

धंदे के प्रति ईमानदार :- चाँदनी संसार भर की वेश्याओं का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री है। वह अपने उस जीवन के साथ इतनी एकरूप हो चुकी है कि वह अपने आपको औरत नहीं तवायफ मानती है। अब उसे वह जिंदगी ठिक ही लगती है। जब वह कमल बोस के पास एक महिने के लिए रहने आती है और बीच में एक रात चंपा के अड्डे पर रूक जाती है तो यह बात कमल बोस को बताकर उसके बीच रुपये बचाने की बात करती है। उसकी वाणी में कृत्रिमता नहीं है। वह इस शोषित समाज व्यवस्था का शिकार बन चुकी है।

जब अंत में कमल बोस अपनी पहचान करा देता है और उसे साथ चलने के लिए कहता है तो वह कहता है - ``अब इसमें -------- क्या रखा है------- ओ -- माँ।``[7]

यह वाक्य चाँदनी की करूण गाथा की पुकार कही जा सकती है। चाँदनी इस जीवन रूपी जहर को पूरा पी गयी है, इतनी शक्ति उसमें है। उसे जीवन में श्रद्धा है। वह स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर है। उसमें संकटों से जुझने की शक्ति है। इस प्रकार एक आशावादी और आत्मविश्वास से युक्त नायिका के रूप में चाँदनी चित्रित है।

समीरा :-

कमलेश्वर जी के लघु उपन्यास `वही बात` की नायिका समीरा चीफ इंजिनियर की पत्नी है। उन दोनों के असफल दाम्पत्य जीवन की कहानी इस उपन्यास का विषय है। समीरा का बहुत कम चरित्र अंकन इस उपन्यास में हुआ है। चाहे वह केंद्र के रूप में क्यों न हो।

अकेलापन - चीफ इंजिनियर प्रशांत एक बहुत बड़े प्रोजेक्ट के पीछे लगा हुआ है। वह उस प्रोजेक्ट को किसी भी हालत में पूरा करना चाहता है। इसमें डेप्युटी चीफ नकुल उसकी सहाय्यता कर रहा है। प्रशांत हमेशा व्यस्त रहता है और समीरा उसके लौटने का इंतजार करती रहती है। वह कभी कभी उससे पूछती भी है - ``इतनी सफलता को लेकर क्या करोगे, जितनी है, उतनी ही मेरे लिए काफी है।``[8]

वह बेहद अकेलापन महसूस करती है। लेकिन प्रशांत उसे बातों में बहला देता है।

नकुल के प्रति आकर्षित :- अकेली समीरा धीरे-धीरे डेप्युटी चीफ नकुल के प्रति आकर्षित होने लगती है। और उसे प्रशांत की कमी महसूस नहीं होती। वह पहले बार-बार प्रशांत को हिदायत देती है लेकिन प्रशांत अपनी ही रौ में बढ़ता चला जाता है। सफलता की अति आकांक्षा के कारण वह समीरा से दूर होता चला जाता है। जब प्रशांत को समीरा और नकुल के सम्बन्धों का पता चलता है तो प्रशांत उसे त्यागने के लिए तैयार हो जाता है।

उब - जब समीरा नकुल के साथ रहने लगती है तो फिर वह भी उसी प्रकार सफलता की आकांक्षा लेकर बैठ जाता है। वह भी समीरा की उपेक्षा करने लगता है और समीरा फिर एक बार अकेली पड़ने लगती है। समीरा का जीवन फिर से उबने लगता है।

इस उपन्यास में समीरा के चरित्र चित्रण के रूप में सिर्फ उसका अकेलापन पाककला कौशल्य, सौंदर्य आदि बातों को ही लिया गया है। मनुष्य की अतिसफलता की आकांक्षा परिवार विघटन का कारण कैसे बन जाता है, इस बात का चित्रण समीरा के माध्यम से किया गया है।

बड़ी दादी -

कमलेश्वर के `सुबह-दोपहर-शाम` उपन्यास की नायिका बड़ी दादी है। पूरे`उपन्यास में बड़ी

दादी ही आरंभ से अंत तक छायी है। उपन्यास के बीच में ही चाहे बड़ी दादी की मृत्यु हुई है परंतु शांता के रूप में वह अंत तक विराजमान है।

अद्‌भुत चरित्र - बड़ी दादी का चरित्र आरंभ से ही अद्‌भुत दिखाई देता है वह परिंदो से बाते किया करती है। वह आँधी के आने की या बाढ़ आने की पूर्व सूचना भी देती है। अंत में वह जंगल में सभी को इकट्ठा कर लेती है और अपना वनदेवी का रूप दिखा देती है। वहाँ उन्हें घेरकर जंगली चीते-भालु भी बैठे है। लोमड़ी और बारहसिंगों को पारिवारिक आत्मीयता देती हुई दादी वहाँ अति मानवीय तत्त्व के रूप में विराजमान है। ऐसा लगता है कि वे वहाँ कोई तपस्या कर रही है। उसके थोडे दिनों बाद वह मर जाती है।

अंग्रेज विरोधक :- दादी अंग्रेजों का इतना विरोध करती है कि जब उसका पोता रेल चलाने के लिए जाता है तो वह घर छोड़कर ही चली जाती है उसने अंग्रेजों के द्वार किए गये एक-एक खून का बदला खून से लेने की ठान ली है। इस रेल के कारण पूरा परिवार बिखर गया है। उस परिवार में जसवंत की माँ और पुत्री को छोड़ सभी अंग्रेज भक्त है, इसी बात का दादी को गुस्सा आता है।

दृढ़ प्रतिज्ञा - उसने अंग्रेजों के खून का बदला खून से लेने की जो बात ठान ली है, वह पूरी कराने में अपनी जिंदगी गँवा देती है। इस बात का बीज शांता में डालकर ही वह मर जाती है। इतनी वह दृढ़ प्रतिज्ञ है।

इस प्रकार एक दृढ़ प्रतिज्ञा, अंग्रेजों से घोर घृणा करनेवाली नारी और एक अद्‌भुत चरित्र के रूप में दादी उभरी है।

कमलेश्वर जी के `समुद्र में खोया हुआ आदमी` और `लौटे हुए मुसाफिर` में कोई नायिका नहीं है। जो स्त्री पात्र है वे सहाय्यक के रूप में आये है। `समुद्र में खोया हुआ आदमी` की तारा अर्थाभाव से युक्त नौकरीपेशा, सुंदर और कुँवारी माँ के रूप में चित्रित हुई है तो `लौटे हुए मुसाफिर` की नसीबन दयालु, दूसरों को मदद करनेवाली, साहसी स्त्री के रूप में चित्रित है। इसी उपन्यास की सलमा पति से पीड़ित सुंदर, असहाय्य साहसी स्त्री के रूप में चित्रित हुई है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि कमलेश्वर जी ने जिन नायिकाओं का चरित्र चित्रण किया है

उससे उनके मन की गहराई का पता चलता है। अत्यंत यथार्थ रूप में कमलेश्वर जी ने अपनी नायिकाओं के चरित्रों को उद्‌घाटित किया है।

कमलेश्वर की उपन्यासों की नायिकाओं की समानता चरित्र-चित्रण -

कमलेश्वर जी ने जो दस उपन्यास लिखे हैं उनमें से कुछ नायिकाओं के चरित्र चित्रण में समानता देखने को मिलती है। अर्थात कुछ चरित्रगत विशेषताएँ ऐसी है जो किसी एक ही नायिका का के चरित्र में है।

आर्थिक विवशता को हम कमलेश्वर के तीन नायिकाओं के चरित्र में देख सकते है - बंसिरी, चाँदनी और तारा। इसी विवशता के कारण उनपर होनेवाली प्रतिक्रिया चाहे अलग-अलग हो जाती है। जहाँ एक ओर बंसिरी बेची जाती है, वही चाँदनी वेश्या बन जाती, और तारा कुँवारी माँ बन जाती है। इस प्रकार अर्थाभाव इन तीनों पर ही बहुत बुरा असर डालता है।

कमलेश्वर ने कुछ नायिकाओं के माध्यम से अकेलेपन की समस्या का चित्रण करके यह दिखाया है कि अकेलेपन के कारण मनुष्य की स्थिति क्या हो जाती है लगभग तीन उपन्यासों की नायिकाएँ इस अकेलेपन के कारण अपने जीवन को अधिक अरुचिकर बना देती है। जैसे `डाक बंगला' की इरा जब अकेली हो जाती है तो वह नये पुरुष साथी की खोज में निकल पड़ती है। क्योंकि उसके अनुसार जीवन में किसी भी तरह का क्यों न हो पुरुष चाहिए। फिर वह पुरुषों को फाँसने लगती है। और हर एक पुरुष से तुम मेरे जीवन में आये प्रथम व्यक्ति हो यह कहकर उससे प्यार हासिल करना चाहती है। जिससे उसका शरीर मात्र एक `डाकबंगला' बनकर रह जाता है। `तीसरा आदमी' उपन्यास की नायिका चित्रा के जीवन में जब अकेलापन आ जाता है तो अपने पति को छोड़कर `तीसरे आदमी' के प्रति वह आकर्षित होती है। जिससे उसका परिवार बिखर जाता है। जब कि, `वही बात' की कहानी लगभग यही होते हुए भी थोड़ी अलग है। इसकी नायिका समीरा जब अकेली बन जाती है तो वह अपने पति के असिस्टंट के प्रति आकृष्ट हो जाती है और फिर उसी के साथ जीवन बिताने का फैसला करती है और उसका पति उसे छोड़ देता है। इस प्रकार यह अकेलापन कहीं परिवार विघटन का कारण

बन जाता है। उसके जीवन में ऊब, घूटन का वातावरण पलने लगता है। कभी-कभी वो झूठ बोलने के लिए भी तैयार हो जाती है। घर में एक तनावपूर्ण वातावरण दिखाई देता है।

झूठी प्रतिष्ठा के लिए अपने पति और बेटी को भी त्यागने के लिए तैयार हो जाने वाली मालती जैसी 'काली आँधी' उपन्यास की नायिका भी है जो शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है और परिवार विघटन का कारण भी बन जाती है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की प्रमुख पात्र तारा के माध्यम से उपन्यासकार कमलेश्वर ने नैतिक मूल्यों का पतन कैसे हुआ यह दिखाते हुए आधुनिक युवतियों की धृष्ठता को दिखाया है।

इस प्रकार हम यह पाते है कि, कमलेश्वर अपने उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण करने में सफल हुए है।

निष्कर्ष :

कमलेश्वर ने नायिकाओं का चरित्र-चित्रण करते समय नायिकाओं का विस्तार से और मार्मिकता से चित्रण किया है।

कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों की नायिकाओं का चित्रण किया है उनमें से अधिकतर नायिकाएँ मध्यवर्गीय है और सिर्फ 'काली आँधी' की नायिका मालती उच्चवर्गीय पात्र है। कमलेश्वर ने अधिकतर अर्थाभाव उससे नायिकाओं पर होनेवाली प्रतिक्रिया आदि का चित्रण इस उपन्यास में किया है। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में कोई बेची गयी, तो कोई वेश्या बनी। मनुष्य सारे ढोंग कर सकता है सिर्फ पैसे का ढोंग नहीं कर सकता। यही बात इससे साफ जाहिर हो जाती है। वेश्या समस्या का कारण भी हमे इसी से पता चलता है। पारिवारिक विघटन जैसी समस्या भी इसी से निर्माण होती है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि कमलेश्वर ने परिस्थिति के अनुकूल, पात्रों के अनुकूल, प्रसंगानुकूल नायिकाओं का चयन किया है। और उनकी अत्यंत यथार्थ चरित्रगत विशेषताओं के चित्रण में लेखक सफल हुए है। उनकी नायिकाओं का चरित्र चित्रण देखने पर हमें इस बात का पता चलता है कि अलग ही प्रकार की विशेषताओं से युक्त नायिकाओं के चित्रण करने में कमलेश्वर जी सफल हुए है।

संदर्भ [redacted] सूची

1. कमलेश्वर - `एक सड़क सत्तावन गलियाँ ,पृ.112।
2. कमलेश्वर - `डाक बंगला`, पृ-64।
3. डा.अमर जायसवाल - `हिंदी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार`, पृ.45।
4. कमलेश्वर - `तीसरा आदमी`, पृ.52।
5. कमलेश्वर - `तीसरा आदमी, पृ.71।
6. कमलेश्वर - `आगामी अतीत`, पृ.96।
7. कमलेश्वर - `आगामी अतीत`, पृ.111।
8. कमलेश्वर - `वही बात`, पृ.48।